एम. ए. (संस्कृत) तृतीय सेमेस्टर

CC - XII पाश्चात्य समालोचना

- प्लेटो की काव्यविषयक दृष्टि

By
Dr. Sanjay Kumar chaubey
(Assistant professor)
Dept. of Sanskrit
H. D. Jain college, Ara

Scanned by CamScanner

(प्लेटो की काव्यविषयक दृष्टि) (1)

प्लेटो का समय 427 ई. पू. से 347 ई. पू. तक माना जाता है और यूनान के प्राचीन दार्शनिकों एवं कलामर्मज्ञों में इनका सर्वोच्च स्थान है। वास्तव में प्लेटो दर्शनशास्त्र के प्रगाढ़ पंडित थे और इन्होंने तीस से अधिक संवादों या कथोपकथनों (वार्तालाप) के माध्यम से विषय की चर्चा की रचना की थी। इन संवादों में से फेडरस (phaedrus), इयोन (Ion) और रिपब्लिक नामक संवादों में प्लेटो के आलोचना सम्बन्धी विचार भी हैं तथा उनके आधार पर प्लेटो का काव्यशास्त्रीय दृष्टिकोण स्पष्ट किया जा सकता है। यद्यपि प्लेटो ने आलोचना के सम्बन्ध में क्रमबद्ध रूप से विचार व्यक्त नहीं किये और प्रायः अस्फुट रूप में ही इनके आलोचनात्मक विचार प्राप्त होते हैं। तथा वे किसी अन्तिम निर्णय पर नहीं पहुँचते लेकिन इतना होते हुये भी प्लेटो की साहित्य विषयक मान्यतायें इतनी गम्भीर और मौलिक हैं कि पाश्चात्य काव्यशास्त्र का आरम्भ इन्हीं से माना जाता है।

प्लेटो और इनकी काव्यविषयक दृष्टि :- प्लेटो एक प्रत्ययवादी दार्शनिक था जो वस्तु से पूर्व उसके विचार की सत्ता का समर्थक था। इनके अनुसार दृश्यमान जगत् प्रत्यय (परमसत्ता) का अनुकरण है। काव्य उस अनुकरण का भी अनुकरण है अतः मूल्य सत्य से दुगुनी दूरी पर है। प्लेटो का चिंतन अपनी युगीन परिस्थितियों से परिचालित था। पेलोपो-नेशियन युद्ध में एथेन्स की पराजय ने इनकी जीवन दृष्टि को नैतिकता और तर्क की कठोर सीमाओं में कस लिया था। प्लेटो के समय (427/347) और इससे पहले तक कवि की स्थिति अत्यन्त आदरणीय और उच्चस्थ थी। वह उपदेशक, मार्गदर्शक, न्याय और संस्कृति का ज्ञाता तथा शिक्षक समझा जाता था। होमर उस युग का ऐसा ही कवि था जिसके काव्य को लोग जीवन निर्देशिका के समान पढ़ते थे। इसने अपने काव्य में देव-युद्धों का भी वर्णन किया था जिस पर प्लेटो को गहन आपत्ति

थी। प्लेटो की मान्यता थी कि – "... तब्के चिन्ह कथा-कहानियों को सर्वप्रथम सुनें वे उदात्त विचारों की आदर्श हो"। ये मात्र मनोरञ्जन प्रधान और अस्वस्थ मनोवेगों को उद्दीप्त करनेवाली न हों जैसा कि तत्कालीन कविता कर रही थी। यही कारण है कि होमर के लिये अपनी तमाम शुभाशंसाओं के बावजूद वह सामाजिक उपादेयता और नैतिकता विहीन कविता का समर्थन नहीं करता। कविता उसे उसी सीमा तक स्वीकार्य है जहाँ तक वह राज्य और मानव जीवन के लिये स्वास्थ्यकर – लाभप्रद हो। +

वह यह सहन नहीं कर सकता था कि यदि अपने काव्य में देवताओं को कुटिल, पापी, षड्यन्त्रकारी, क्रूर, लालची अत्याचारी" चित्रित करे क्योंकि इससे पाठक पर कुप्रभाव पड़ने का डर था। इस प्रकार दार्शनिक, सुधारक तथा अपनी नयी शिक्षा पद्धति के संचालक के दृष्टिकोण से उसने कविता पर अपने विचार प्रकट किये हैं न कि विशुद्ध कलाकार या काव्यशास्त्री के नाते।

कविता पर प्लेटो के आरोप :– प्लेटो ने युगीन कविता पर तीन आक्षेप लगाये थे –

1. काव्य दैवीय प्रेरणा पर आधारित है तथा विचार एवं तर्क द्वारा संचालित नहीं है।
2. काव्य असत्य पर आधारित एवं अनैतिक है।
3. काव्य अनुकरण का अनुकरण है।

इन तीनों आरोपों के कारण ही वह कविता को पाठ्यक्रम में अत्यन्त निम्न श्रेणी का स्थान देता है और केवल वीरों की गाथायें या देवताओं की स्तुति के पढ़ाने में वे स्तुति देता है।

इसी तरह वह अपने आदर्श राज्य में कवियों को बहिष्कृत करने तथा कविता को प्रतिबन्धित करने की सिफारिश करता है।

काव्य दैवी प्रेरणा पर आधारित है तथा विचार एवं तर्क द्वारा संचालित नहीं है की व्याख्या ———

काव्य रचना में दैवी प्रेरणा का महत्व प्लेटो के बहुत पहले से यूनानी समाज में स्वीकृत रहा है। हमारे यहाँ जैसे वाग्देवी सरस्वती काव्यप्रेरणा की अधिष्ठात्री मानी जाती है, इसी तरह प्राचीन यूनान में म्यूज (muse) कविता की अधिष्ठात्री देवी थी। यूनान के आदि कवि होमर अपने प्रसिद्ध महाकाव्य इलियड, ओडेसी के प्रारंभ में काव्यदेवी म्यूज (muse) से प्रार्थना करता है कि वह उसे शक्ति प्रदान करे ताकि वह सफल एवं प्रभावपूर्ण रचना प्रस्तुत कर सके। प्लेटो समय तक यह एक सामान्य स्वीकृत धारणा थी कि काव्यदेवी की प्रेरणा एवं शक्ति के वशीभूत होकर ही कवि अलौकिक आनन्द प्रदान करनेवाली कविता की रचना कर सकता है। प्लेटो आयोन नामक ग्रन्थ में काव्य की दैवी प्रेरणा के सिद्धान्त की समीक्षा करता है। उसकी मान्यता में —

1. कविता कला से नहीं अपितु दैवी प्रेरणा द्वारा रचित होती है
2. कविता मनुष्य की तर्क या विचार शक्ति को नहीं जगाती।
3. दैवी प्रेरणा के अधीन कवि जो कुछ कहता है, जरूरी नहीं कि वह वस्तु सत्य ही हो।
4. दैवी प्रेरणा से कवि के शब्दों में चमत्कार आता है और वह भावों अथवा संवेगों को उद्दीप्त करनेवाला अतिरंजित एवं अस्वाभाविक वर्णन प्रस्तुत करता है।
5. काव्यरचना में एक चुम्बकीय गुण होता है। कवि जब प्रेरणा के अधीन होता है तब सर्वप्रथम उसके भीतर यह गुण आता है। इससे लेकर काव्य वाचक के भीतर इसका सम्प्रेषण होता है। तथा यहीं गुण श्रोताओं के भीतर सम्प्रेषित होता है और सभी एक असत्य एवं अवास्तविक लोक में विचरण करते हैं।
6. कविता, भावों, संवेगों को उद्दीप्त करती है और तर्क एवं विचार-शून्यता को प्रोत्साहन देती है।

इन विचारों की समीक्षा करें तो हमें पता चलता है कि

5 वीं शती ई.पू. में प्लेटो के ये विचार अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं न केवल यूनान बल्कि भारत में भी काव्य रचना में दैवी प्रेरणा को बड़ा माना जाता रहा है। होमर ने जिस प्रेरणा का महत्व स्वीकार किया है, अपने यहाँ भी कालिदास और तुलसीदास आदि महाकवियों ने अनेक स्थानों पर स्वीकार किया है कि असार शब्द, अर्थ, छन्द, भी काव्यकला आदि सब युद्ध में विख्यात होने पर भी ईश्वरीय कृपा के बिना अच्छी रचना शक्ति असम्भव है। काव्य के तीन हेतुओं में सर्वप्रमुख प्रतिभा तो ईश्वरीय वरदान ही है।

2. काव्य असत्य पर आधारित तथा अनैतिक है।
रिपब्लिक में प्लेटो ने कविता पर अनैतिकता का आरोप लगाते हुये इसे राज्य द्वारा प्रतिबन्धित करने की वकालत की है।
प्लेटो स्वयं काव्यानुरागी था उसने होमर तथा हेसायड जैसे महाकवियों की रचनाओं को इसने गम्भीरता पूर्वक अध्ययन किया। होमर के प्रति तो उसके मन में असीम श्रद्धा भी थी किन्तु लोकमङ्गल के मूल्य पर वह किसी का महत्व स्वीकार नहीं कर सकता था।
प्लेटो का मानना है कि कवि निरंकुश होता है। रचना के समय वह यह नहीं सोच सकता कि उसके शब्दों का पाठकों अथवा श्रोताओं के समाज पर कैसा प्रभाव पड़ेगा।
1 होमर और हेसायड जैसे समर्थ महाकवियों ने नायकों को सर्वगुण सम्पन्न एवं समस्त गुणों के स्रोत ईश्वर को कई बार सामान्य मानवों की तरह ईर्ष्या, द्वेष में एवं अविवेक पूर्ण करते तथा बदला लेते हुये दिखलाया है।
० रामायण जैसे प्रख्यात वीरों को भी अवश्यंभावी वशीभूत अधीरता पूर्वक विलाप करते हुये चित्रित करने की कुचेष्टा की है।

इस प्रकार एक सम्पन्न आदमी को दीन-हीन होते हुये तथा एक निकृष्ट आदमी को सफलता प्राप्त करते चित्रित करना किस सामाजिक न्याय का तकाजा है?

प्लेटो के समय कवि त्रासदी एवं सुखान्त नाटकों के रचयिताओं ने ऐसा ही किया और आज भी इस प्रकार के चित्र साहित्य में देखने को मिल जाते हैं।

प्लेटो एक सार्थक प्रश्न उठाता है कि समाज क्या बच्चों को ऐसी रचनायें पढ़ने-पढ़ाने की अनुमति देगा? वह कहता है कि बच्चों का हृदय कोमल होता है वे जो कुछ भी सुनते या देखते हैं उनका उनके हृदय पर गहरा प्रभाव पड़ता है। ऐसी परिस्थिति में क्या यह उचित है कि हम उन्हें ऐसी बुरी कवितायें एवं कहानियाँ सुनायें जिससे उनके मन पर बुरा प्रभाव पड़े।

प्लेटो कहता है कि ऐसी कवितायें नैतिकता के विरुद्ध हैं और उन्हें स्वीकृति नहीं देनी चाहिये।

प्लेटो के अनुसार निश्चित रूप से प्रारम्भ में बच्चों को नैतिक कवितायें और कहानियाँ सुनानी चाहिये जिससे उनके भीतर सद्गुणों का विकास हो।

इसी आधार पर प्लेटो कविता पर प्रतिबन्ध लगाने की माँग करता है और कहता है कि यदि नाटककार ~~प्रेक्षावकौशिक~~ प्राणी यदि राज्य की सीमा में दिखाई दे जाय तो उसे आदर पूर्वक राज्य से बाहर निकालने का रास्ता दिखाया जाय और स्पष्ट बता दिया जाय कि प्लेटो के आदर्श राज्य में ऐसे जैसे प्राणी के लिये कोई जगह नहीं है।

Ans. प्लेटो को यह श्रेय प्राप्त है कि उसने सर्वप्रथम कविता की सामाजिक उपादेयता पर उंगली उठायी। प्लेटो का तर्क है कि कवि तथी महानता का अधिकारी है जबकि उसकी

कला सत्य हो, उसकी शिक्षा गम्भीर हो और लोगों को प्रोत्साहित बनाकर वह राष्ट्र की सफलता कर सके।

इस प्रकार उक्त परिप्रेक्ष्य में देखने पर प्लेटो की काव्य जन्य मतें कविता सम्बन्धी उनकी निजी विलक्षणता पर नहीं अपितु परिस्थिति विशेष में लिखे गये काव्य को आधार बनाकर निर्मित हुआ है। श्रेष्ठ काव्य के प्रति वह उदार एवं सहानुभूतिपूर्ण उद्गार प्रकट करता है।